डॉ. लेस्ली एलन, यहेजकेल , व्याख्यान 18, इज़राइल नवीनीकरण ,
यहेजकेल 36:16-38

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहेजकेल की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 18 है, इस्राएल का नवीनीकरण। यहेजकेल 36:16-38।

अब हम पुस्तक के अध्ययन में अध्याय 36, श्लोक 16 से 38 तक आते हैं, और मैं इसे इस्राएल के नवीनीकरण के रूप में देखता हूँ। श्लोक 16 में हम पढ़ते हैं, प्रभु का वचन मेरे पास आया। और यह, बेशक, एक नया रहस्योद्घाटन प्राप्त करने के लिए हमारे पास सामान्य सूत्र है, और यह एक नई साहित्यिक इकाई का परिचय देता है।

और 16 से 38 तक का यह अंश पुस्तक की सकारात्मक शिक्षा के केंद्र में है। इस पर नज़र डालने पर, हम सामान्य संरचना देख सकते हैं। संदेश पद 17 से शुरू होता है, और पद 21 में एक निजी संदेश है, जो सिर्फ़ यहेजकेल के कानों के लिए है।

फिर, श्लोक 22 से 38 में निर्वासितों को दिए जाने वाले सार्वजनिक संदेश को प्रस्तुत किया गया है। यह सार्वजनिक संदेश तीन अलग-अलग भागों में आता है, जिनमें से प्रत्येक को उद्धरण सूत्र द्वारा प्रस्तुत किया गया है, इस प्रकार प्रभु परमेश्वर कहते हैं। वे भाग श्लोक 22 से 32, 33 से 36, और 37 और 38 हैं।

पद 17 से 21 में यहेजकेल को दिया गया निजी संदेश बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें दो समस्याओं को दर्शाया गया है जिन्हें सुलझाया जाना आवश्यक है। और फिर पद 22 से 38 में दिया गया सार्वजनिक संदेश दिखाएगा कि परमेश्वर उन दो समस्याओं को कैसे सुलझाएगा। पहली समस्या परमेश्वर के लोगों से संबंधित है, और दूसरी समस्या स्वयं परमेश्वर से संबंधित है।

और ये दोनों ही समस्याएँ जटिल कारक थे, जिनका समाधान होना ज़रूरी था, क्योंकि हम परमेश्वर के लोगों के निर्वासन से वापस अपने देश लौटने के बारे में सोचते हैं। पहली समस्या श्लोक 17 से 19 में बताई गई है, और दूसरी श्लोक 20 से 21 में बताई गई है। आइए हम दोनों को पढ़ें।

हे मनुष्य, जब इस्राएल के घराने ने अपनी धरती पर निवास किया, तो उन्होंने अपने तरीकों और अपने कामों से इसे अपवित्र कर दिया। मेरी दृष्टि में उनका आचरण मासिक धर्म के समय की स्त्री की अशुद्धता के समान था। इसलिए, मैंने उन पर अपना क्रोध उंडेला, क्योंकि उन्होंने देश पर खून बहाया था और उन मूर्तियों के लिए जिनसे उन्होंने देश को अपवित्र किया था।

मैंने उन्हें जातियों में तितर-बितर कर दिया, और वे देश-देश में फैल गए। उनके आचरण और उनके कामों के अनुसार मैंने उन्हें दण्ड दिया। परन्तु जब वे जातियों के पास गए, तो जहाँ कहीं भी

गए, उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र किया, क्योंकि उनके विषय में कहा गया था, ये यहोवा के लोग हैं।

और फिर भी उन्हें अपने देश से बाहर जाना पड़ा। लेकिन मुझे अपने पवित्र नाम की चिंता थी, जिसे इस्राएल के घराने ने उन राष्ट्रों के बीच अपवित्र किया था, जिनके पास वे आए थे। परमेश्वर ने इस निजी संदेश में यहेजकेल के साथ इन दोनों समस्याओं को साझा किया है, और जैसा कि मैंने कहा, यह शेष अंश में सार्वजनिक संदेश की पृष्ठभूमि होगी।

पहला मुद्दा वह है जिसके बारे में हमने पुस्तक के पहले भाग में अक्सर सुना है, लोगों की पापपूर्णता। यह एक ऐसा विषय है जिसके बारे में हम पुराने नियम के अन्य भविष्यवक्ताओं और यहोशू से लेकर राजाओं तक के इस्राएल के जीवन के महाकाव्य इतिहास में भी खूब पढ़ते हैं। वह इतिहास असफलता का इतिहास था, इस्राएल का इतिहास जो परमेश्वर की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा।

और यहाँ, उस पाप को रूपकात्मक रूप से अनुष्ठानिक अशुद्धता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में पूजा करने से रोकता है। यह वह भाषा थी जिसे पुजारी यहेजकेल बहुत अच्छी तरह से समझता था, और यहाँ इसका उपयोग हमें याद दिलाता है कि यहेजकेल ने भविष्यवक्ता बनने से पहले एक पुजारी के रूप में प्रशिक्षण लिया था। फिर, श्लोक 17 के अंत में एक सांस्कृतिक उदाहरण दिया गया है जिसमें मासिक धर्म के दौरान एक महिला को अशुद्ध माना जाता था, और जब तक वह पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जाती, तब तक उसके साथी के साथ संभोग करना वर्जित था।

और एक महत्वपूर्ण पुरोहिती पाठ है, लैव्यव्यवस्था 15, 19-31, जो मासिक धर्म के कारण होने वाले अनुष्ठान संदूषण को बताता है। यह उस अशुद्धता का हिस्सा था जो हो सकती थी। इससे वह अशुद्ध हो जाती थी, और संभवतः, इससे उसका यौन साथी भी अशुद्ध हो जाता था।

और इसलिए, अशुद्धता का यह रूपक है। समस्या यह थी कि यह अशुद्धता तब होगी जब उनमें से कोई भी मंदिर में जाएगा, और फिर मंदिर अपवित्र हो जाएगा। और यह लैव्यव्यवस्था 15 की आयत 31 में बताया गया है।

इस प्रकार तुम इस्राएल के लोगों को उनकी अशुद्धता से अलग रखना, ताकि वे मेरे निवास को अपने बीच में अपवित्र करके अपनी अशुद्धता में न मरें। पवित्र स्थान अपवित्र हो सकता था, लोग मर सकते थे, समस्याओं की एक पूरी श्रृंखला। लेकिन यह बहुत महत्वपूर्ण था, क्योंकि पाप के इस मुद्दे के परिणामस्वरूप अशुद्धता हुई।

यहाँ, इस मासिक धर्म वाली महिला की अशुद्धता का उपयोग परमेश्वर के लोगों की घोर पापपूर्णता और उनके लिए परमेश्वर के मानकों पर खरा न उतरने के रूपक के रूप में किया गया है। और इसलिए, परमेश्वर के न्याय ने भूमि से निष्कासन का रूप ले लिया। पुराने नियम की सोच में, भूमि बहुत महत्वपूर्ण थी।

यह ईश्वर और इस्राएल के बीच के रिश्ते का थर्मामीटर था। अच्छे रिश्ते का मतलब था अच्छी फसलें और आम तौर पर देश में अच्छा जीवन। लेकिन लोगों और ईश्वर के बीच खराब रिश्ते का मतलब था अकाल और भूमि से जुड़ी दिनचर्या का सामान्य रूप से टूटना।

परमेश्वर के साथ बुरे रिश्ते का अंतिम माप भूमि पर रहने का पूर्ण विघटन था, वास्तव में, भूमि से निष्कासन। परमेश्वर, लोगों और भूमि का यह स्वस्थ त्रिकोण अब बिखर गया था क्योंकि लोग अपने पाप के परिणामस्वरूप निर्वासन में थे। मातृभूमि के नुकसान के परिणामस्वरूप निर्वासन और अन्य देशों में फैलाव हुआ।

इसलिए, श्लोक 19 का अंत श्लोक 17 की तरह ही होता है, जो इस्राएल के आचरण और कर्मों की मूल समस्या से संबंधित है - स्पष्ट रूप से बुरा आचरण और बुरे कर्म - जो निर्वासन का कारण है। यह इस्राएल की समस्या थी जिसे परमेश्वर ने पहले निर्वासन द्वारा निपटाया था। और हम देखेंगे, जब आप देश में लौटने के बारे में सोचेंगे तो यह एक समस्या पैदा करने वाला है।

तुम्हें कैसे पता कि यह सब फिर से नहीं होने वाला है? यह वही क्रम है। यह पहली समस्या होने जा रही है। वे तब पापी थे।

क्या यह सच नहीं होगा जब वे देश लौटेंगे? वही लोग, वही लोग। आयत 20 से 21 दूसरी समस्या प्रस्तुत करते हैं, अब परमेश्वर की अपनी समस्या, परमेश्वर की व्यक्तिगत समस्या जो निर्वासन के माध्यम से पहली समस्या के समाधान से उत्पन्न हुई। प्राचीन निकट पूर्व में, धर्म अनिवार्य रूप से क्षेत्रीय था।

तुम एक देश में रहते थे, और तुम उस देश के परमेश्वर की पूजा करते थे, जो अब तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हारा विशेष परमेश्वर था। गैर-इस्राएली, जब निर्वासन को देखते थे, तो जानते थे कि इसका क्या मतलब है, या उन्होंने सोचा कि वे जानते हैं कि इसका क्या मतलब है। भूमि का नुकसान इस्राएल के परमेश्वर की कमजोरी का संकेत था।

और यह बेबीलोन के मुख्य राष्ट्रीय देवता मर्दुक की विजयी शक्ति का संकेत था। बेशक, पुराने नियम ने इसे अलग तरीके से समझाया कि इस्राएल का परमेश्वर ईश्वरीय रूप से कार्य कर रहा था और बेबीलोन के लोगों को अपने न्याय के एजेंट के रूप में इस्तेमाल कर रहा था। लेकिन यह एक बहुत ही परिष्कृत धार्मिक व्याख्या थी जो अन्य राष्ट्रों के लिए नहीं आई होगी।

वैसे भी, लोगों को देश से बाहर निकालने में यहोवा की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची। और जैसा कि आयत 20 और 21 में कहा गया है, परमेश्वर के पवित्र नाम को अपवित्र किया गया। ये प्रभु के लोग हैं, फिर भी उन्हें उसके देश से बाहर जाना पड़ा।

तो फिर वह बहुत बड़ा ईश्वर नहीं था, है न? बहुत शक्तिशाली नहीं था, है न? उसे भूमि छोड़नी पड़ी, और दूसरे ईश्वर ने उससे अधिक शक्तिशाली के रूप में कार्यभार संभाला। और इसलिए, उस समय की संस्कृति, अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति के संदर्भ में, यहोवा हार गया था। और इसलिए, यहाँ दूसरी समस्या है।

और परमेश्वर के नाम या उसकी प्रतिष्ठा को सामान्य माना गया था। नाम को अपवित्र किया गया था। अपवित्र का अर्थ है सामान्य मानना, इस्राएल के परमेश्वर से जुड़ी विशेष पवित्रता के प्रति कोई सम्मान नहीं।

और इसलिए यह दूसरी समस्या है - निर्वासन के कारण उत्पन्न समस्या। निर्वासन पहली समस्या का एक बढ़िया समाधान था, लेकिन इसने एक और समस्या खड़ी कर दी।

यह दूसरी समस्या निर्वासन के कारण उत्पन्न हुई थी, और अब परमेश्वर को इसे संतोषजनक तरीके से निपटाना है। यह पहली बार नहीं है कि यहेजकेल की पुस्तक में परमेश्वर के नाम के अपवित्रीकरण का मुद्दा सामने आया है। अध्याय 20 में, यह एक ऐसा कारक था जिसने परमेश्वर को मिस्र में लोगों द्वारा पाप किए जाने पर न्याय करने से रोक दिया था।

मिस्र में इस्राएल की मूर्तिपूजा के कारण उसके लोगों को सज़ा मिलनी चाहिए थी, लेकिन मिस्रियों ने इसे गलत समझा होगा। और, ओह, वे पीड़ित हैं। खैर, उनका भगवान उनकी देखभाल नहीं कर रहा है, है न? और इसलिए वहाँ यह समस्या थी।

जंगल में, पहली पीढ़ी के साथ, परमेश्वर ने उन्हें उनके योग्य दण्ड नहीं दिया, अपने नाम के लिए, अपने पवित्र नाम के लिए। और साथ ही, जहाँ तक दूसरी पीढ़ी का सवाल है, अध्याय 20 में, परमेश्वर के नाम के लिए, उसने उस दूसरी पीढ़ी को वहीं दण्डित नहीं किया, बल्कि भविष्य में न्याय की संभावना थी, जिसे यहेजकेल ने निर्वासन के संदर्भ में व्याख्यायित किया। और इसलिए, अध्याय 20 में, हमने निर्गमन में, या निर्गमन से पहले के इतिहास में और जंगल के समय में परमेश्वर के नाम के इस अपवित्रीकरण के बारे में एक नियमित समस्या के रूप में चर्चा की है, और यह यहाँ है।

अब, यह अशुद्धता और यह अपवित्रता प्राचीन इस्राएल के अनुष्ठान में बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे थे। लैव्यव्यवस्था 10:10 कहता है कि लोगों को टोरा का अर्थ सिखाने में पुजारियों का एक कर्तव्य था, आपको पवित्र और सामान्य के बीच और अशुद्ध और स्वच्छ के बीच अंतर करना है। और, बेशक, स्वच्छ और अशुद्ध इस्राएल ने अपने सामान्य पाप में इसे गड़बड़ कर दिया था जिसके परिणामस्वरूप निर्वासन हुआ था, लेकिन यह पवित्र और सामान्य, यह पवित्र और अपवित्र, परिणाम यह हुआ कि स्वयं परमेश्वर के लिए, वहाँ एक गड़बड़ हो गई थी, और परमेश्वर का पवित्र नाम अपवित्र हो गया था।

और इसलिए, यह उन समस्याओं के विपरीत है जो होनी चाहिए, परमेश्वर के पवित्र नाम का अपवित्रीकरण और इस्राएल की अशुद्धता को उनके पाप के संदर्भ के रूप में। और इसलिए, इस दूसरी समस्या के साथ, राष्ट्र की नज़र में यह गलत प्रतिनिधित्व था। इसलिए, यहोवा नाम को विशेष पवित्रता वाला नहीं माना जाता था।

वह एक छोटा सा भगवान था, जिसकी पूजा एक विजित राष्ट्र द्वारा की जाती थी। और इसलिए, इसराइल ने अपने भगवान को भी अपने साथ घसीट लिया था। यही समस्या थी।

यहेजकेल को जो सार्वजनिक संदेश देने के लिए कहा गया है, वह श्लोक 22 में, परमेश्वर द्वारा इस दूसरी समस्या के समाधान के साथ शुरू होता है। यह वास्तव में अधिक महत्वपूर्ण समस्या थी, परमेश्वर की अपनी समस्या, दूसरी समस्या से अधिक महत्वपूर्ण, इसलिए इसे दूसरे स्थान पर रखा जाएगा। उत्तर यह था कि परमेश्वर इस्राएल के निर्वासन को समाप्त करने जा रहा था और अपने लोगों को एक नए पलायन में उनकी मातृभूमि में वापस ले जाने वाला था और शक्ति का यह प्रदर्शन अन्य राष्ट्रों के लिए उसकी विशेष पवित्रता को साबित करेगा।

और यह पद 22 से 24 में बताया गया है। इसलिए, इस्राएल के घराने से कहो, प्रभु परमेश्वर यों कहता है, हे इस्राएल के घराने, मैं तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त यह करने जा रहा हूँ, जिसे तुमने उन जातियों के बीच अपवित्र किया है जिनके बीच तुम आए हो। मैं अपने महान नाम को पवित्र करूँगा, जिसे जातियों के बीच अपवित्र किया गया है और जिसे तुमने उनके बीच अपवित्र किया है।

और राष्ट्रों को पता चल जाएगा कि मैं प्रभु हूँ, प्रभु परमेश्वर कहते हैं, जब मैं तुम्हारे माध्यम से उनकी आँखों के सामने अपनी पवित्रता प्रदर्शित करता हूँ। मैं तुम्हें राष्ट्रों से ले जाऊंगा और सभी देशों से इकट्ठा करूँगा और तुम्हें तुम्हारे अपने देश में ले आऊँगा। और यह दूसरी समस्या का उत्तर होने जा रहा था, शक्ति का वह महान प्रदर्शन। परमेश्वर इतना शक्तिशाली है कि लोगों को वादा किए गए देश में वापस ले जा सकता है।

यहाँ यही विचार है। पिछले व्याख्यान में, हमने इस संबंध में भजन 126 और श्लोक 2 का उल्लेख किया था। और वहाँ यह कहा गया था, फिर राष्ट्रों के बीच यह कहा गया था, प्रभु यहोवा ने उनके लिए महान कार्य किए हैं। और वहाँ, अंत में, यह स्वीकारोक्ति थी: परमेश्वर ने अपनी प्रतिष्ठा वापस पा ली है, और यह अब कलंकित नहीं है।

और इस तरह, निर्वासन समाप्त हो गया, निर्वासन से वापसी में। यह पुनर्स्थापना थी, परमेश्वर के पवित्र नाम का अपवित्रीकरण नहीं, बल्कि वास्तव में परमेश्वर के नाम का पवित्रीकरण। और इसलिए, प्रेरणा, यह स्पष्ट रूप से पद 22 में कहा गया है, अगर मैं निर्वासितों में से एक होता, तो मुझे यह सुनना पसंद नहीं होता: परमेश्वर द्वारा इस्राएल की पुनर्स्थापना के लिए प्रेरणा केवल उसके अपवित्र नाम की समस्या थी।

इस्राएल के पास कोई अंतर्निहित दावा नहीं था; निर्वासितों में ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसे उनके पक्ष में कार्य करने के लिए प्रेरित करता; वे एक सड़े हुए लोग थे। और परमेश्वर ने उन्हें भूमि से वंचित करके बहुत न्याय किया था। नहीं, उसका अपना सम्मान दांव पर लगा था। इसलिए निर्वासन का अंत होना ही था।

निर्वासन का अंत उनके कलंकित नाम को साफ़ करने के लिए एक धार्मिक आवश्यकता थी। और, ज़ाहिर है, यही गारंटी थी, अगर आप इस पर गहराई से सोचें, तो यह वादा निर्वासन से आने वाली वापसी की गारंटी देता है। इसलिए, निर्वासितों को यकीन हो सकता है कि ऐसा होगा, लेकिन आपसे कोई लेना-देना नहीं है, आपके बारे में ऐसा कुछ भी आकर्षक नहीं है जिसके लिए मैं आपको वापस लाना चाहता हूँ।

लेकिन यह मेरी समस्या है जिसका समाधान यहाँ किया जा रहा है। और इसलिए, यह शुद्ध अनुग्रह था, वह उद्धार जो परमेश्वर उनके लिए लाने जा रहा था। एक दिलचस्प घटना यह है कि यह केवल पुराने नियम की चिंता नहीं है, बल्कि नए नियम में, एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान पर, परमेश्वर के नाम और सम्मान के बारे में यह मुद्दा फिर से उठाया गया है।

और मैं मत्ती अध्याय 6 और श्लोक 9 के बारे में सोच रहा हूँ, जो उस प्रार्थना की शुरुआत है जिसे प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को कहने के लिए दिया था। और उस प्रार्थना में इस याचिका को विशेष स्थान दिया गया था, तेरा नाम पवित्र माना जाए। दूसरे शब्दों में, तेरा नाम अपवित्र होने के बजाय विशेष और पवित्र माना जाए।

यह याचिका यहेजकेल 36 और श्लोक 23 की याद दिलाती है: मैं अपने लोगों को निर्वासन से वापस लाने की इस अद्भुत घटना में अपने महान नाम को पवित्र करूंगा। और तब राष्ट्र को पता चलेगा कि मैं प्रभु हूँ। और फिर, बेशक, प्रभु की प्रार्थना जारी है: तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है।

और इसलिए प्रभु की प्रार्थना का पहला भाग परमेश्वर के नाम के अपवित्रीकरण की इस समस्या से और परमेश्वर के नाम के पवित्रीकरण के उस नए प्रमाण से प्रेरित है। और मेरे विचार में, मुझे लगता है कि प्रभु की प्रार्थना का यह पहला भाग इस्राएल के निर्वासन से लौटने के समान एक महान घटना है। वास्तव में, मसीह के दूसरे आगमन के लिए, जब पूर्ण उद्धार प्राप्त हो जाएगा, परमेश्वर का राज्य पूरी तरह से पृथ्वी पर आ जाएगा, और परमेश्वर की इच्छा पूरी तरह से पूरी हो जाएगी।

तभी, और केवल तभी, परमेश्वर की इच्छा को सार्वभौमिक रूप से उस विशेष तरीके से सम्मानित किया जाएगा जैसा कि उसे होना चाहिए। और वह आशा जीवन में चर्च के मिशन का आधार है। और यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा कि वे उस प्रार्थना की शुरुआत में उस आशा के साकार होने के लिए लगातार प्रार्थना करें।

पद 25 से 28 अब उस पहली समस्या पर आ सकते हैं जो हमारे खंड के पहले भाग में, निजी संदेशों 17 से 19 में बताई गई थी। और इसका अंतर्निहित कारण वह बड़ा जोखिम था जो परमेश्वर अपने लोगों को स्वदेश वापस जाने देने में उठा रहा था। क्या परमेश्वर और इस्राएल उसी समस्या में वापस नहीं जा रहे थे जिसने वादा किए गए देश पर पहले के कब्ज़े को परेशान किया था? क्या वह पाप और अशुद्धता नहीं होगी? क्या वह घोर पाप फिर से नहीं होगा? क्या कोई गारंटी थी कि यह फिर से वैसा नहीं होगा? और इसलिए, यह वही मुद्दा हो सकता है, वही मुद्दा फिर से हो सकता है।

लेकिन पुरानी समस्या के संभावित पुनरुत्थान के लिए परमेश्वर के पास एक उत्तर है। यदि दूसरी समस्या के लिए बाहरी उत्तर की आवश्यकता थी, निर्वासन से वापसी के द्वारा परमेश्वर की शक्ति का वस्तुनिष्ठ प्रदर्शन, तो, पहली समस्या के लिए आंतरिक उत्तर की आवश्यकता थी। और वास्तव में एक से अधिक, लेकिन अनिवार्य रूप से एक आंतरिक उत्तर।

इस्राएल के लोगों के बारे में आंतरिक रूप से कुछ किया जाना था। और इसलिए, सबसे पहले, वह अपने लोगों को क्षमा करके, स्लेट को साफ करके एक नई शुरुआत देगा। और यहाँ श्लोक 25 में, मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूँगा, और तुम अपनी सारी अशुद्धता से शुद्ध हो जाओगे, और तुम्हारी सारी मूर्तियों से मैं तुम्हें शुद्ध करूँगा।

तो, सबसे पहले, पिछले पापों की क्षमा होनी थी। यही बात इस बात से कही जा रही है। स्वच्छ जल का छिड़काव पाप करने की तस्वीर के रूप में अशुद्धता का एक प्रतीकात्मक प्रतिरूप है।

संख्या 19, पद 13 में अशुद्धता के उपचार के रूप में शुद्धिकरण के लिए जल का उल्लेख किया गया है। और इसे यहाँ एक रूपक के रूप में प्रयोग किया गया है, जैसा कि आपको याद होगा, भजन 51 और पद 7 में है। वह भी क्षमा के लिए एक रूपक उपयोग को दर्शाता है। मुझे धोओ, और मैं बर्फ से भी अधिक सफेद हो जाऊँगा।

परमेश्वर का स्नान, बीती बातों को भूल जाना। लेकिन इससे भी ज़्यादा की ज़रूरत थी। माफ़ी पाना एक बात है, लेकिन उसके बाद क्या होगा? क्या फिर से उन्हीं पुराने पापों में नहीं फँसना चाहिए और इतिहास खुद को दोहराना चाहिए? और इसलिए परमेश्वर के लोगों के मामले में परमेश्वर के काम को आंतरिक रूप से अपनाने का एक और पहलू होना चाहिए था ।

सबसे पहले, वह रिश्ता, इसलिए उनकी अशुद्धता अतीत की बात थी, और आपको माफ़ कर दिया गया, आपको एक नई शुरुआत मिली। लेकिन फिर, आगे बढ़ते हुए, कुछ और होना चाहिए था। और यह श्लोक 26 और 27 है।

मैं तुम्हें नया हृदय दूंगा, मैं तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा, मैं तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा, मैं तुम्हारे भीतर अपनी आत्मा देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों का पालन करो और मेरे नियमों को मानने में सावधान रहो। यह एक बहुत ही विशेष वादा था, और हम यहेजकेल की पुस्तक को याद करते हैं, जो इसे अध्याय 11 में वापस डालने और पुस्तक के उस दूसरे संस्करण में वापस डालने से खुद को रोक नहीं सका जो 587 के बाद की स्थिति से संबंधित था। 11:19 और 20, मैं उन्हें एक हृदय दूंगा और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; मैं उनके शरीर से पत्थर का हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय दूंगा ताकि वे मेरी विधियों का पालन करें और मेरे नियमों को मानें और उनका पालन करें।

और इसलिए, यहेजकेल की पुस्तक, मुझे इसे दो बार कहना होगा, यह बहुत ही अद्भुत वादा था जो यहाँ किया जा रहा था। परमेश्वर की इच्छा के प्रति एक नई, निरंतर संवेदनशीलता होने जा रही थी। क्षमा करना अपने आप में पर्याप्त नहीं था।

निर्वासन से पहले परमेश्वर के प्रति उनके पत्थर जैसे कठोर हृदय की जगह इस कोमल हृदय के द्वारा परमेश्वर की इच्छा के प्रति एक नई संवेदनशीलता प्रदर्शित की जानी थी। और यह नई आत्मा परमेश्वर की अपनी आत्मा की अभिव्यक्ति होगी जो उसकी इच्छा के अनुरूप होगी। क्योंकि पद 27 में एक नई आत्मा की व्याख्या मेरी आत्मा के रूप में की गई है, इसलिए मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूँगा।

और इसलिए परमेश्वर की इच्छा को साझा करना था जहाँ परमेश्वर के लोगों का संबंध था। और इसलिए न केवल परमेश्वर, लोग और भूमि का पुराना त्रिकोण फिर से सत्य होगा, बल्कि पुरानी वाचा का आदर्श, दो-तरफा सूत्र, तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। यह एक वास्तविकता हो सकती है।

और यही बात पद 28 के अंत में कही गई है: देश में वापस लौटते हुए तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। वह वाचा का रिश्ता एक परिपूर्ण पूर्णता, एक परिपूर्ण वास्तविकता तक पहुँचेगा। हम अभी कह रहे थे कि नए नियम ने प्रभु की प्रार्थना में पद 23 को उठाया।

और हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि इसमें पद 25 से 26 का भी अच्छा उपयोग किया गया है। और वास्तव में, यह यूहन्ना अध्याय 3 में है, यूहन्ना के सुसमाचार अध्याय 3 में, उस साक्षात्कार में जो यीशु ने नीकुदेमुस के साथ किया था, कि यहाँ यहेजकेल 30 में कही गई बातों की पुनः समीक्षा की गई है। पद 5, मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि बिना जल और आत्मा से जन्मे कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

यही बात यीशु ने नीकुदेमुस से कही थी। खैर, नए जन्म का उल्लेख अनंत जीवन की शुरूआत को दर्शाता है जिसके बारे में यूहन्ना 3 में आगे बात की जाएगी। लेकिन फिर, पानी से जन्म लेना, नए जीवन का उद्घाटन पानी है।

बेशक, यह हमें पद 36 के पद 25 पर वापस ले जाता है, जो कि परमेश्वर का क्षमा का शुद्धिकरण कार्य है। मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूँगा, और तुम अपनी सारी अशुद्धता से शुद्ध हो जाओगे। और इसलिए हम वहाँ हैं, क्षमा का वह मूल कार्य। यह वह नई शुरुआत है जो परमेश्वर प्रदान करता है।

दूसरा भाग आत्मा से जन्म लेना है, नई आत्मा, ईश्वर की आत्मा से सुसज्जित होना है, जो यहेजकेल 36 में कही गई बातों के अनुरूप है। इस नए जीवन के दो पहलू हैं, क्षमा से शुरू होकर और फिर आत्मा का उपहार, जो ईश्वर की इच्छा को पूरा करने में सक्षम बनाता है। और यीशु, आपको याद होगा कि यूहन्ना 3 में, कहते हैं कि क्या आप इसे नहीं पहचानते? वह कह रहे हैं कि क्या आपने हाल ही में यहेजकेल 36 नहीं पढ़ा है? आपको ये बातें पता होनी चाहिए।

और तुम्हें यह समझना होगा कि यह मेरी शिक्षा और मेरे अपने काम के ज़रिए सच हो रहा है। पद 29 से 30 इस संदेश का अगला भाग हैं। 29 मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धियों से बचाऊँगा , और मैं अनाज को इकट्ठा करके उसे प्रचुर मात्रा में बढ़ाऊँगा और तुम पर अकाल नहीं डालूँगा।

मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज को प्रचुर मात्रा में बढ़ाऊँगा ताकि वे फिर कभी राष्ट्रों के बीच अकाल के अपमान को न झेलें। सबसे पहले, 29 में, श्लोक 25 से 28 के उस दोहरे उत्तर का यह सारांश है। मैं तुम्हें तुम्हारी सभी अशुद्धियों से बचाऊँगा , उस प्रारंभिक क्षमा के द्वारा जिसके बारे में मैं बात कर रहा था और इस नई आत्मा के उस निरंतर प्रावधान द्वारा, वास्तव में, मेरी आत्मा, परमेश्वर कहते हैं।

लेकिन एक और बात थी जिस पर विचार करना ज़रूरी था क्योंकि हमने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया कि पद 18 में परमेश्वर के लोगों के पाप ने देश को अपवित्र कर दिया था। पद 18 में इस्राएल के पाप करने से देश अपवित्र हो गया था। और इसलिए, इस्राएल के उद्धार को देश तक विस्तारित करने की आवश्यकता थी।

भूमि को अपवित्र और गिराए जाने के बाद उसका नवीनीकरण होना था। इसलिए, भूमि को नई उर्वरता में मुक्ति प्रदान की गई। वास्तव में, न केवल अकाल अतीत की बात होगी, बल्कि इजरायल के खुद के प्रति दृष्टिकोण के साथ-साथ सम्मान की मनोवैज्ञानिक हानि भी समाप्त हो जाएगी।

ताकि तुम फिर कभी अन्य जातियों के बीच अकाल के कारण अपमान न सहो। आयत 31 और 32 हमें इस समग्र संदेश के अंतिम भाग तक ले जाती है, और यह भाग 31 और 32 में एक चुनौतीपूर्ण नोट पर समाप्त होता है।

तब तुम अपने बुरे कामों और अपने बुरे कामों को याद करोगे, और अपने अधर्म और घिनौने कामों के कारण खुद से घृणा करोगे। यह तुम्हारे लिए नहीं है कि मैं यह करूँ, प्रभु परमेश्वर कहता है, यह तुम्हें पता होना चाहिए। तुम्हारे बारे में कोई भी अच्छी बात नहीं थी जिसने मुझे आकर्षित किया कि मैं उन्हें निर्वासन से वापस ले जाना चाहता हूँ।

वे अच्छे लोग हैं, नहीं। हे इस्राएल के घराने, अपने कामों के लिए लज्जित और निराश हो। और हम वापस उसी विषय पर आ रहे हैं जो यहेजकेल की पुस्तक में एक विषय रहा है।

उन्हें अपने पापपूर्ण अतीत को कभी नहीं भूलना था और हमेशा उस पर पछताना था। कभी नहीं भूलना था लेकिन हमेशा उस पर पछताना था। और यह यहाँ एक स्वस्थ चीज़ थी।

और हमने इसे अध्याय 6 में पढ़ा था। हमने इसे अध्याय 16 में फिर से पढ़ा था। हमने इसे अध्याय 20 में एक बार फिर पढ़ा था। और यहाँ, इस पर एक बार फिर जोर दिया गया है।

यह पछतावा उस गलत रास्ते पर फिर कभी न चलने के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा हो सकता है। देखें कि इसका अंत कहां हुआ। और इसलिए, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए।

पिछले व्याख्यान में हमने कहा था कि पौलुस हमेशा याद रखता था कि वह पापियों में सबसे बड़ा है। उसने कभी भी खुद को यह भूलने नहीं दिया, जिससे उसके जीवन में परमेश्वर की असीम कृपा झलकती थी।

और फिर 32 की शुरुआत में 22वें श्लोक में कही गई बातों की याद दिलाई गई। कि इस्राएल के पास ऐसा कोई गुण नहीं था जो परमेश्वर को आकर्षित कर सके और उन्हें एक और मौका देने के लिए प्रोत्साहित कर सके। नहीं, इसके विपरीत सच था।

उनके मार्ग केवल वही अधर्म और घृणित कर्म थे जिनका उल्लेख श्लोक 31 में किया गया है। वह सड़ांध जिसके कारण ईश्वर उन्हें छोड़ सकता था, सिवाय शुद्ध अनुग्रह के। मुफ़्त और बिना किसी लाभ के अनुग्रह।

लेकिन एक और कारण था, परमेश्वर के नाम का अपमान, जिसके कारण परमेश्वर ने ऐसा किया। दिलचस्प बात यह है कि यशायाह की पुस्तक में श्लोक 43 और 25 में एक समानांतर मार्ग है।

जो इसी भाव को सामने लाता है। मैं वह हूँ जो अपने लिए तुम्हारे अपराधों को मिटा देता हूँ और मैं तुम्हारे पापों को याद नहीं रखूँगा। और इसलिए, अपने लिए।

यह हमें वापस उसी बात पर ले जाता है जो यहेजकेल ने परमेश्वर के पवित्र नाम के अपवित्र किए जाने के बारे में कही थी। वास्तव में, यशायाह 43 और पद 25 में क्षमा के लिए यही प्रेरणा थी। और फिर हम 33 और 36 पर आगे बढ़ते हैं।

अब हम अंत के बहुत करीब पहुंच रहे हैं। और यह देश में होने वाले परिवर्तन को और आगे बढ़ाता है। जब यह लोगों के पाप करने से अपवित्र और अपमानित नहीं रह जाएगा।

33 से 36. प्रभु यहोवा यों कहता है, जिस दिन मैं उस दोहरे उपाय से तुम्हें तुम्हारे सारे अधर्म से शुद्ध करूंगा, उस दिन मैं नगरों को बसाऊंगा और उजड़े हुए स्थानों को फिर से बनाऊंगा।

जो ज़मीन उजाड़ थी, वह उजाड़ हो जाएगी, जो सब आने-जाने वालों की नज़र में उजाड़ थी। वे कहेंगे कि यह उजाड़ ज़मीन अदन के बाग़ की तरह हो गई है। और जो शहर उजाड़ और बर्बाद हो गए थे, वे अब आबाद और मज़बूत हो गए हैं।

तब तुम्हारे आस-पास के बचे हुए राष्ट्र जान लेंगे कि मैं यहोवा ने उजड़े हुए स्थानों को फिर से बनाया है और जो उजाड़ था उसे फिर से लगाया है। मैं यहोवा ने कहा है और मैं इसे करूँगा। और यह अगला भाग फिर से उस परिवर्तन के बारे में सोचता है जो देश में होने वाला है जब यह अब पहले की तरह अपवित्र नहीं रहेगा।

और इस बात का संकेत है कि यह परिवर्तन समग्र मार्ग की दूसरी समस्या को हल करने में मदद करेगा। परमेश्वर के नाम का अपमान और परमेश्वर की मान्यता होगी। राष्ट्रों को यह संदेश मिलेगा कि यहोवा महान परिवर्तक है।

और अब किसी छोटे, कमज़ोर ईश्वर की छवि पेश नहीं की जाएगी। 37 से 38 में परिवर्तन की थीम जारी है। लेकिन यह एक अलग पादरी समस्या का भी उत्तर देता है जो स्पष्ट रूप से निर्वासितों के सामने थी।

अगर हम प्रथम विश्व युद्ध के बाद इंग्लैंड के बारे में सोचें, तो वहां भयानक जनहानि को लेकर बहुत दुख था। उस नरसंहार में बहुत से युवा मारे गए थे। और ऐसा लगता है कि निर्वासितों के मन में यह चिंता थी।

हमने बहुत से लोगों को खो दिया है। यह हमारे लिए बहुत बड़ी चिंता की बात है। यहेजकेल 12:16 में भविष्यवाणी की गई थी कि कुछ लोग तलवार, अकाल और महामारी से बच जाएँगे।

और ऐसा ही हुआ, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वे पहले से कहीं कम संख्या में थे। और यह यहूदा और यरूशलेम के खिलाफ बेबीलोन के अभियान से जुड़ा था। अब, परमेश्वर ने खुद को निर्वासितों के लौटने के बाद उनकी संख्या में वृद्धि के लिए प्रार्थनाओं के लिए खुला घोषित किया है।

मातृभूमि के वे शहर जो अब बर्बाद हो चुके हैं, अंततः लोगों से भर जाएँगे। मैं इस्राएल के घराने से भी कहूँगा कि मैं उनके लिए यह काम करूँ। उनकी आबादी को झुंड की तरह बढ़ाऊँ।

बलिदान के लिए झुंड की तरह। यरूशलेम में नियत त्योहारों के दौरान झुंड की तरह। वैसे ही उजड़े हुए शहर लोगों के झुंड से भर जाएँगे।

तब वे जान लेंगे कि मैं ही वे हूँ, प्रभु। और इसलिए, परमेश्वर इस समस्या के प्रति संवेदनशील है जिसे लोग महसूस कर रहे हैं। उन्होंने अपनी आबादी के बहुत से लोगों को खो दिया है।

और इसलिए, निर्वासन से पहले के यरूशलेम में त्योहार के समय से एक रूपक का उपयोग किया जाता है। और निर्वासित लोग वापस सोच सकते थे और याद कर सकते थे कि त्योहार के समय कैसा होता था। तीर्थयात्रियों द्वारा चढ़ाए जाने वाले बलिदान के लिए भेड़ों के झुंड बड़ी संख्या में उपलब्ध होते थे।

यह एक ऐसी याद थी जो पुजारी भविष्यवक्ता यहेजकेल के पास थी, और बहुत से निर्वासितों ने इसे बहुत प्रिय माना होगा। यह निर्वासन से पहले के यरूशलेम की सामान्यता का हिस्सा था।

खैर, यहाँ इसे इस्राएल की जनसंख्या में भारी वृद्धि का रूपक बनाया गया है। और इसलिए, अंत में, तब वे जान लेंगे कि मैं प्रभु हूँ। अंत में, जब खंडहरों से जीवन फिर से उभरेगा, तो निर्वासितों को अपने महान ईश्वर की वास्तविकता का आश्वासन मिलेगा।

अगली बार हम पुस्तक के अध्याय 37 पर जायेंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहेजकेल की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 18 है, इस्राएल का नवीनीकरण। यहेजकेल 36:16-38।